कव्वाली

तर्ज-पर्दा उठे सलाम हो जाये

जब धनी मेहरबां हो जाये,
अपनी रूह पे कुर्बान हो जाए
धाम धनी मेरे मेहरबान,
प्राण पिया रूह पे कुर्बान
मेहरबां मेहरबां मेहरबां

1- होती हैं रूहें जब दिलगीर तुम बिन
होते हैं प्रीतम भी बेताब उन बिन
तुम हो दरिया मौज हैं हम
किस तरह हम जुदा हो जायें

2- अपने साहेब का है फुरमान ये ही
शाद तूं एक बार कर तो सही
हम बुलाये वो न आये
किस तरह ये आसान हो जाये

Nijanand App

3- नूरे जमाल इश्क सुराही लायें
जाम रूहों को प्रीतम आप पिलायें
दिल हो मेरा इश्क तेरा
जामे इलाही में हम खो जायें

4- तेरी रहमत का ना है पार कोई
तेरी उल्फत से न इन्कार कोई
तेरी मेहर बढ़ती जाये
बढ़ते बढ़ते सलाम हो जाये

Nijanand App